अमरकांत का उपन्यास साहित्य और नारी चरित्र

*मुध सैन

देश में हुए जागरण और नारी चेतना के आन्दोलनों ने नारी में जागृति पैदा की है। उनके अन्दर 'स्व' की भावना पैदा हुई है। सदियों से नारी का स्वाभिमान कुचला गया है,और उसे कुचलने वाले भी उसके अपने ही रहें है। पिता के घर हो चाहे ससुराल में उसके पैरो को बांधने वाले कही न कहीं उसके अपने थे। जिसके कारण स्त्री स्वयं का अस्तित्व भूलकर कहीं बेटी कहीं बहन कहीं बहू तो कहीं पत्नी कहीं माँ इन उपाधियों के आदर्श रूप को ही सिद्ध करने में लगी रही, और कुदरत के बनाये उस स्वरूप को भूल गई कि वह हाड़ मांस से बनी एक मानव रूप है जिसके शरीर में भी तर्क रखने वाला एक दिमाग और भावनाओं को अनुभव करने वाला एक ह्रदय है। इसी स्व की भावना को अमरकांत के उपन्यासों में नारी चरित्र के माध्यम से स्थान मिला है। उनके बहुत से नारी पात्रों ने इस नारी स्वरूप को सामने रखा है।

चाहे शहर हो गॉव हो या कस्बा हर स्थान की स्त्री अमरकांत के उपन्यासों की केन्द्र बिन्दु रही है। उनके उपन्यासों की स्त्रियॉ सामाजिक मानसिक और आर्थिक गुलामी से मुक्त होना चाहती है। तथा स्वावलंबी बनकर समाज और परिवार की प्रगति में सहयोगी बनना चाहती हैं। अमरकांत के उपन्यासों की नारी चरित्र शोषण के विरूद्ध आवाज उठाती है, दासी या गुलाम समझने वाली व्यवस्था के विरूद्ध खडी दिखाई देती है। वह अपने अधिकारों से परिचित है, उसे अपमान का जीवन मंजूर नही है। वह सामाजिक बदलाव के साथ साथ स्वयं की स्थिति को भी बदलना चाहती है। जैसे – अमरकांत के 'लहरे' उपन्यास की नारी पात्र सुमित्रा कहती है– "दुनिया की स्त्रियों में बदलाव हो रहा है हम अब भी जहालत में पड़ी हुई निष्क्रिय हैं और रोज अपमान और मार सह रही हैं। हमको आपस में मिलना जुलना चाहिये, संगठित होना चाहिए। अपनी आवाज बुलंद करनी चाहिए। इस आजाद और लोकतांत्रिक देश में अपने जनतांत्रिक अधिकारों की माँग करनी चाहिए, उसके लिए कोशिश करनी चाहिए। जब स्त्रियॉ खुद अपनी मानसिकता बदलेंगी तभी कुछ हो सकता है। जरूरत पड़ने पर एक दूसरे की मदद करनी चाहिए और अपने तरीके से गलत बात का जवाब देना चाहिए।

नारी चेतना की जागृति ही यह सिद्ध कर पाई है कि आज स्त्री सामाजिक आर्थिक राजनैतिक, व्यवसायिक तथा वैज्ञानिक हर क्षेत्र में पुरूषों से आगे है। हर क्षेत्र में आगे होकर अपनी सेवाऐं देने में अपनी रूचि जागृत कर रही है। आत्मबोध और आत्मनिर्भरता ने नारी को मजबूती प्रदान की है जिसके कारण वह सामाजिक रूढियों और परम्पराओं का खुलकर विरोध करने के लिए आगे आ रही है ताकि वह अपने स्वाभिमान की रक्षा कर सकें। अमरकांत के उपन्याास की नारी पात्र इस बात को स्वीकार करती है कि इसमें दोष हमारी सामाजिक व्यवस्था का है, जिसमें स्त्री को मन पसंद पति और पुरूष को मन पसंद पत्नी चुनने का अधिकार नही। त्याग एक बहुत बड़ा गुण है, पर स्त्री को अपने कर्तव्यों के साथ साथ अपने अधिकारों की भी चिंता करनी चाहिए। जो स्त्री अपने को पुरूष की दासी मानती है, वह मुझे जरा भी नही जॅचती है।

दहेज जैसी समस्या एक लम्बे समय से सामाजिक बुराई बनी हुई है जिसका नुकसान स्त्रियों को भुगतना पड़ता है। कई स्त्रियों की जान भी दहेज के हवन में स्वाह कर दी गई है। उस कुप्रथा का वर्णन भी अमरकांत ने 'ग्राम सेविका' उपन्यास में दर्शाया है। जिसमें उपन्यास की नायिका दहेज जैसी कुप्रथा के कारण अपने प्रेमी द्वारा त्याग

दी जाती है उसका प्रेमी अतुल उस लड़की से शादी करता है जिसके माता–पिता एक मोटी दहेज की रकम उसके माता–पिता को देते है। लेकिन नायिका दमयंती अपना आत्मविश्वास नही खोती है उसे किसी के सहारे की आवश्यकता नहीं है। वह अपनी लड़ाई स्वयं लड़ती है और ये प्रतिज्ञा लेती है कि वह स्वयं के साथ परिवार की जिम्मेदारीयों का भी निर्वाह करेगी। जैसे वह अपने बीमार पिता को आश्वासन देते हुए कहती है ''बाबूजी आप फिक्र न करें ..... '' मैं नौकरी करूंगी। इस प्रकार दहेज जैसी कुप्रथा से आहत दमयंती हिम्मत नही हारती वह साहस संघर्ष और कर्मठता का जीवन अपनाकर अपने दुःख को निराशा तथा अपमान का बदला चुकाएगी। अभी तक बात आई थी शिक्षित महिलाओं की किन्तु समाज में महिलाओं का एक वर्ग ऐसा भी है जो अशिक्षित है। ये वे महिलाऐं है जो दूसरों के घरों में चौका–बर्तन करने जाती है और इस दौरान उन्हें बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अमरकांत के उपन्यासों की कुछ स्त्री चरित्र अशिक्षित, घरेलू कामकाजी है जिनके स्व को जागृत करने की आवश्यकता है जिससे उनमें नारी चेतना के भाव को परिलक्षित किया जा सकता है। सुन्नर पांडे की पतोह' उपन्यास की राजलक्ष्मी अशिक्षित होते हुए भी सामाजिक बुराईयों का विरोध करते हुए अपने व्यक्तित्व को प्रमुखता देती है। पति द्वारा त्याग दिये जाने के बावजूद वह किसी के सामने झुकती नहीं है। वह अपने औचित्य और स्वाभिमान की सुरक्षा के लिए सदैव तत्पर रहती है। जीवोकापार्जन के लिए वह घर–घर खाना बनाने का काम करती है वहां उसको हर पुरूष की नियति और नजर में एक ही भाव दिखाई देता है हवस और वासना का भाव वे केवल हैसियत से बड़े थे लेकिन स्त्रियों के संदर्भ में उनकी सोच बहुत छोटी थी वह स्त्रियों को केवल दासी और भोग विलास की वस्तु समझते थे। राज लक्ष्मी ऐसे लोगों की वास्तविकता को उजागर करते हुए कहती है– ''अनेक तरह के लोगों के वहां उसने काम किया । कोई नेता था कोई अफसर, कोई व्यवसायी, कोई अध्यापक और कोई कलर्क हर जगह लगभग एक ही दृश्य था। जो कुछ ऊपर से दिखाई देता उसका दूसरा रूप भीतर से देखने में अघतन बाहर से जो सभी प्रतिष्ठित और साफ–सुथरे नजर आते वे भीतर से बेहद चीखते चिल्लाते थे। लगभग सभी अपनी सीधी सादी आज्ञाकारी और दिन रात खपने वाली बीबियों को चौबीस घंटे कोसते रहते, उन्हें अन्य तरीकों से प्रताडित करते और दूसरों की बहू–बेटियों को अपने जाल में फंसाने की चाल चलते। घरों के अन्दर औरतों की हालत दरबे में बंद मुर्गियों की तरह थी जहां वे आपस में लड़ती, भुनभुनाती चिंखती रोती कलपती और कराहती ।

इस उपन्यास में राजलक्ष्मी का सामाजिक व्यवस्था के प्रति विद्रोह रूप सामने आया है। वह आत्म बोध से परिपूर्ण कठिन से कठिन परिस्थितियों एवं चुनौतियों को स्वीकार करने के लिए सदैव तैयार रहती है। राजलक्ष्मी के विद्रोही बनने में उसकी परिस्थितियॉ और परिवेश महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। किसी भी समाज की उन्नति या अवनति का कारण वहॉ की सामाजिक व्यवस्था होती है। सामाजिक व्यवस्था को परिवर्तित करके हम समाज और लोगों की सोच में परिवर्तन कर सकते हैं और यदि समाज की सोच परिवर्तित होगी तो स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन आना स्वाभाविक है। किसी भी देश की प्रगति की स्थिति का आंकलन उस देश की स्त्रियों की प्रगति के अनुमान से लगाया जा सकता है। अमरकांत के उपन्यासों की स्त्री पात्र इस बात से परिचित है इसी लिए वह अपने स्वतंत्र अस्तित्व में विश्वास रखती है। अमरकांत के उपन्यासों की प्रगतिशील नारी यह कहती है कि स्त्री कोई काठ की लकड़ी नही, रेत में पाई नही है, उसमें सुन्दर इच्छाऐं है, स्वाभिमान है विवके है अत्याचार और उत्पीडन के विरूद्ध घृणा के भाव है राष्ट्र प्रेम है। खूब पढ़–लिखकर नए ज्ञान विज्ञान अपना कर स्त्री को अपना स्वाभिमान अपना कद खड़ा करना होगा, रूढियों का विरोध करना होगा।

निष्कर्षतः– अमरकांत के उपन्यासों की स्त्री चरित्र विविधता लिये हुए है। उनमें शहरी ग्रामीण, कस्बाई शिक्षित, अशिक्षित पत्नी प्रेमिका, सखी पड़ोसन अनेक प्रकार की स्त्रियां है। जिनकी दृष्टि चेतनाशील, सजग और सकारात्मक है। वह अक्सर सकारात्मक पक्ष रखने में हमेंशा आगे रहती हैं। उनकी स्त्री चरित्र अपनी समस्याओं को व्यक्त करते हुए शोषण और उत्पीड़न का जमकर विरोध करती है। स्त्री जाति की करूणा, विवशता, उसके संघर्ष, विरोध

जीत–हार हर्ष–विवाद सभी बाते अमरकांत के उपन्यासों में देखने को मिलती हैं। उनकी स्त्री चरित्र शारीरिक मानसिक व संवेगात्मक उत्पीड़न को झेलते हुए उन सबसे मुक्ति का मार्ग भी तलाशती नजर आती है। अंत में हम कह सकते है– नये समाज की कल्पना जागरूक और चेतनशील नारी समुदाय के बिना अकल्पनीय और असंभव है।

***हिन्दी विभाग**
सिंघानिया विश्वविद्यालय
पचेरी बड़ी, झुंझुनू (राज.)

संदर्भ सूचीः–

1. अमरकांत लहरे' अमर कृतित्व प्रकाशन इलाहबाद, पहला संस्करण 2008 पृष्ठ 27
2. अमरकांत काले उजले दिन' कमल प्रकाश नयी दिल्ली पहला संस्करण 2003 पृष्ठ 162
3. अमरकांत ग्राम सेविका' राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली पहला संस्करण 2008 पृष्ठ 19
4. अमरकांत सुन्नर पांडे की पतोह' राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली पहला संस्करण 2005 पृष्ठ 106
5. अमरकांत इन्हीं हथियारों सेश राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली पहला संस्करण 2008 पृष्ठ 72
6. बहादूरसिंह परमार, अमरकांत का कथा साहित्य शिल्पयान प्रकाशन दिल्ली।